Asian Journal of Multidisciplinary Studies Available online at www.ajms.co.in
Volume1, Issue 5, December 2013
ISSN: 2321-8819

"महाकवि कालिदास की रचनाओं में सामाजिक, प्राकृतिक चेतना"

डॉ तपेश कुमार चौरे
आम्बेडकर चौक अमेड़ा तह.व जिला बालाघाट

संक्षेप

संस्कृत साहित्य जगत के देदीप्यमान कवि एवं कुलगुरू कालिदास भारतीय संस्कृति के पोषक थे। भारत की संस्कृति इनकी काव्य वाणी में बोलती हैं, और इनके नाटकों में अपना मनोरम रूप दिखाकर मानव मात्र के हृदय का मनोरंजन करती हैं। कालिदास के हृदय का मनोरंजन करती है कालिदास ने अपनी काव्यरस माधुरी से विश्वकवि के रूप में ख्याति प्राप्त की है। कालिदास संस्कृत साहित्य के अद्वितीय कवि माने जाते हैं। कालिदास की रचनाएँ भारतीय वाड्मय की सर्वविध विधाओं से उस प्रकार संलग्न है, जिस प्रकार पर ब्रम्ह का विराट स्वरूप प्राकृति समस्त संपदाओं से संपन्न होता है। महाकवि कालिदास की कविता देववाणी का श्रृंगार है।

भारतीय समाज का सच्चा रूप उनके काव्यों में दिखाई देता है। महाकवि कालिदास ने मानव हृदय की परिवर्तनशील कृतियों को समझने तथा उन्हें अभिव्यक्त करने में चातुर्य रखता है। कालिदास प्रतिभा संपन्न कवि हैं, जिन्होंने अपने काव्य की शैली का रूप निरूपण स्वयं किया है। कालिदास की उपमाएँ लोक तथ प्रकृति के मनोरम चित्रण में कालिदास अद्वितीय है, इनके प्रकृति चित्रण, रमणीयता, भव्यता तथा सजीवता से ओत–प्रोत है।

खोज शब्द – समाज, संपदाओं, ऋतुसंहार

प्रस्तावना

संस्कृत साहित्य जगत के देदीप्यमान कवि एवं कुलगुरू कालिदास भारतीय संस्कृति के पोषक थे। भारत की संस्कृति इनकी काव्य वाणी में बोलती हैं, और इनके नाटकों में अपना मनोरम रूप दिखाकर मानव मात्र के हृदय का मनोरंजन करती हैं। कालिदास के हृदय का मनोरंजन करती है कालिदास ने अपनी काव्यरस माधुरी से विश्वकवि के रूप में ख्याति प्राप्त की है। कालिदास संस्कृत साहित्य के अद्वितीय कवि माने जाते हैं। कालिदास की रचनाएँ भारतीय वाड्मय की सर्वविध विधाओं से उस प्रकार संलग्न है, जिस प्रकार पर ब्रम्ह का विराट स्वरूप प्राकृति समस्त संपदाओं से संपन्न होता है। महाकवि कालिदास की कविता देववाणी का श्रृंगार है।

भारतीय समाज का सच्चा रूप उनके काव्यों में दिखाई देता है। महाकवि कालिदास ने मानव हृदय की परिवर्तनशील कृतियों को समझने तथा उन्हें अभिव्यक्त करने में चातुर्य रखता है। कालिदास प्रतिभा संपन्न कवि हैं, जिन्होंने अपने काव्य की शैली का रूप निरूपण स्वयं किया है। कालिदास की उपमाएँ लोक तथ प्रकृति के मनोरम चित्रण में कालिदास अद्वितीय है, इनके प्रकृति चित्रण, रमणीयता, भव्यता तथा सजीवता से ओत–प्रोत है।

प्रकृति के साथ कालिदास की अपूर्व सहानुभूति है। प्रकृति का निरीक्षण करना तथा उसका मार्मिक अंश ग्रहण करना कालिदास की महती विशेषता है। कवि ने अपनी रचनाओं में प्रकृति का मनोरम चित्रण किया है। ऋतुसंहार कालिदास की इस काव्यकृति में कवि ने ग्रीष्म ऋतु से आरंभ कर छः तुओं का मनोरम वर्णन किया है। मेघदूत में कथानक के सौंदर्य के साथ ही साथ उज्जयिनी जाने के मार्ग का सही भौगोलिक चित्रण महाकाल का पूजन तथा विशाला (उज्जैन) की समृद्धि का वर्णन इसके मुख्य आकर्षण है।

कालिदास संस्कृत साहित्य के सर्वश्रेष्ठ कवि तथा भारतीय संस्कृति के प्रमुख पोषक थे । भारत की संस्कृति इनकी काव्य वाण में बोलती है और इनके नाटकों में अपना मनोरम रूप दिखाकर मानव मात्र के हृदय का मनोरंजन करती है। महाकवि कालिदास ने अपनी काव्यरसमाधुरी से समस्त विश्व को आप्यायित करते हुये विश्व कवि के रूप में ख्याति प्राप्त की है। इनकी ख्याति केवल भारत तक ही सीमित न रहकर विदेशों में भी व्याप्त हो गई ।

प्रो.लैसन महोदय ने इन्हे–" The Brightest star in the firmament of Sanskrit Literature" इस उपाधि से विभूषित किया है।

महाकवि कालिदास ने अपने काव्य चमत्कार से समस्त संसार में ख्याति प्राप्त की है। इनके काव्यों में पदलालित्य, रचनाचातुर्य, कल्पनाशक्ति, प्रकृति वर्णन एवं चरित्र चित्रण अत्यंत ही रोचक है। कालिदास ने अपनी रचनाओं में स्थान– स्थान पर सभी रसों का समावेश किया है, परंतु प्रधान रूप से श्रंगार रस के कवि हैं।

कालिदास का समय

संस्कृत साहित्य के देदीप्यमान कविवर कालिदास के समय के संबंध में प्रमाणिक साक्ष्यों का नितांत अभाव है। कालिदास ने स्वयं या उनके समकालीन किसी भी लेखक ने उनके विषय में कुछ नहीं लिखा है। जो भी मत प्रस्तुत किये हैं वे अनुमान पर आधारित है दुर्भाग्यवश इनकी तिथि के विषय में गहरा मतभेद है वे अनुमान पर आधारित है दुर्भाग्यवश इनकी तिथि के विषय में गहरा मतभेद है। इस संबंध में कुछ प्रमुख मत इस प्रकार है। डॉ. हार्नले आदि कुछ विद्वान कालिदास को छठी शताब्दी ईस्वी में मालवा के शासक, यशोधर्मन का राजकवि बताते हैं। कीथ, भण्डारकर, वी.वी. निराशी प्रभृति अनेक विद्वान कालिदास की स्थिति गुप्तकाल में मानते हैं। इनके अनुसार वे सम्राट चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के नव रत्नों में थे ।

कालिदास के काल के संबंध में जो विभिन्न प्रतिपादित किये गये हैं उनमें प्रमुख रूपसे गुप्तकाल में कालिदास को रखने का मत सबसे अधिक समीचीन प्रतीत है।

कालिदास की कृतियाँ (ग्रन्थ)

ऋतुसंहार– यह कालिदास की प्रथम रचना है ऋतुसंहार छः सर्गों का एक खण्ड काव्य है जिसमें अलग–अलग छः ऋतुओं ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत, शिशिर तथा बसंत का क्रमानुसार वर्णन किया गया है। ऋतुसंहार में प्रकृति का वर्णन बहुत ही मार्मिक तथा दर्शनीय है।

मेघदूत – यह खण्डकाव्य दो भागों में विभक्त है। पूर्व मेघ तथा उत्तर मेघ। इसमें धनपति कुबेर के शाप से निर्वासित रामगिरि पर्वत पर निवास करने वाले एक यक्ष द्वारा वर्षा के आरंभ में मेघ द्वारा अलकापुरी में निवासी करती हुई अपनी विरह व्यथा कान्ता के पास संदेश भेजे जाने का मनोरम वर्णन किया गया है। यह वियोग श्रृंगार की अत्युत्कृष्ट रचना है जिसमें कालिदास की परिपक्त बृद्धि एवं उच्चतम काव्य प्रतिभा का निदर्शन हुआ है। कालिदास ने मेघदूत में प्रसिद्ध बौद्ध दार्शनिक दिङ्.नाग का उल्लेख किया।इस प्रकार है– दिङ्.नागानां पथि परिहरन स्थूलहस्ताव लेपान् [2]

कुमारसंभव – कुमारसंभव 17 सर्गो। में निबद्ध महाकाव्य है, जिसमें शिव और पार्वती के पुत्र कार्तिकेय के जन्म की कथा वर्णित है। विद्वानों के मतों के अनुसार इस महाकाव्य के आठ सर्गों को ही कालिदास की रचना माना जाता है। महाकाव्य के आठवें सर्ग में कवि दिव्य नायक नायिक शिव पार्वती की उनमत और उद्याम रतिक्रीड़ा का वर्णन है।

कुमारसंभव महाकाव्य का वर्णन कवि ने हिमालय पर्वत के वर्णन से प्रारंभ होकर शिव पार्वती के विवाह से लेकर तारकासुर राक्षस के वध का वर्णन सुरूचिपूर्ण एवं सरस शैली में करता है। हिमायत पर्वत की पावनता एवं भव्यता, ऋतुराज बसंत के आगमन से वन की शोभा, शंकर की समाधि, रति के विलाप, पार्वती के तप, नवविवाहित दंपति का युद्ध का वर्णन बहुत ही मनोहारी है। शिव पार्वती का विवाह केवल रतिसुख के लिए ही नहीं था इनके समागम से कुमार कार्तिकेय का जन्म होता है जो देव सेना का सेनापति बनकर तारकासुर का वध करता है और समस्त विश्व का कल्याण करता है। वस्तुतः शिव और पार्वती का विवाह और प्रेम मानवीय विवाह और प्रेम का प्रतीक है जो मानव जाति के अस्तित्व को बनायें रखने के लिए परमावश्यक है।

कुमारसंभव में वर्णित प्रेम परंपरागत परिपाटी से भिन्न कोटी का है। कालिदास के समय तक के सभी काव्यों में पुरूष ही स्त्री के प्रति आकृष्ट हुआ है परंतु कुमारसंभव में पहली बार नारी को पुरूष की प्राप्ति के लिये प्रयत्नशील दिखाया गया है। पार्वती का अप्रतिम सौन्दर्य और कामदेव का दर्प भी जब समाधिस्थ शिव को विचलित न कर पाये तो पार्वती ने तपक रने का निश्चय कियौ

इयेष सा कर्तुमवन्ध्यरूपतां समाधिमास्थाय तपोभिरात्मनः ।

अवाप्यते वा कथमन्यथा द्वयं तथाविधं प्रेम पतिश्च तादृश : ।। [3]

इसी प्रकार कुमार संभव महाकाव्य की चतुर्थ सर्ग में शङ्र की क्रोधाग्नि से कामदेव के भस्मात हो जाने पर रति का विलाप करूण रस के मर्मस्पर्शों का उदाहरण है। भगवान शंकर के ललाटस्थ तृतीय नेत्र से निर्गत अग्नि से भस्मात हुये अपने पति के शरीर को देखकर रति विलाप करती हुई कहती है।

"शशिना सह याति कौमुदी सह मेघेन तडित्प्रलीपते ।

प्रमदाः पतिवर्त्मगा इति प्रतिपन्नं हि विचेतनैरपि।।" [4]

कुमार संभव महाकाव्य में अलंकारों का यथास्थान प्रयोग, वर्णनों की सजीवता तथा रसों का सुंदर परिपाक इस महाकाव्य में हुआ है। इसी प्रकार कालिदास की कविता का चमत्कारी वर्णन है। पार्वती की कठोर तपस्या, शिव की समाधि, रतिविलाप, आदि का वर्णन सजीवता से किया गया है। आठवें सर्ग का रतिवर्णन सौन्दर्य प्रेमियों के मन को मोह लेता है।

रघुवंश – रघुवंश महाकाव्य कालिदास का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य है जो उन्नीस सर्गों में निबद्ध है। महाकवि कालिदास ने महाकाव्य में रघुवंशी राजाओं का बहुत सुंदर वर्णन किया है। इसका प्रारंभ सूर्यवंशी राजा दिलीप से होता है और अवसान राजा अग्निवर्ण पर । दसवें सें पन्द्रहवें सर्ग तक राम के चरित्र का वर्णन अत्यंत ही विस्तार पूर्वक किया गया है।

रघुवंश महाकाव्य के द्वितीय सर्ग में जब दिलीप वसिष्टजी की लाल नन्दिनी को चुराकर लौटते हैं तो सुदक्षिणा उनकी प्रतीक्षा करती हुई स्वागत करने के लिए खड़ी रहती है, दोनों के

बीच में नन्दिनी की शोभा का वर्णन करते हुये कालिदास ने लिखा है–

पुरस्कृता वर्त्मनि पर्थिवेन प्रत्युद्गता
पार्थिवधर्मपत्न्या।

तदन्तरेसा विरराज धेनुर्दिनक्षपामध्यगतेव
सन्ध्या ।। 5

महाकाव्य के नवें सर्ग में दशरथ के राज्य के वर्णन के अंतर्गत मुनिपुत्र वध का उल्लेख किया गया है। अनन्तर दसवें से पन्द्रहवें सर्ग तक राम के चरित का वर्णन अत्यंत ही विस्तारपूर्वक किया गया है। रघुवंश महाकाव्य का कथानक बाल्मीकि रामायण से लिया गया है। रघुवंश महाकाव्य में हनुमान का स्थान भी महत्वपूर्ण है। हनुमान का चरित रघुवंश के अनुसार अनेक स्थानों पर देखने को मिलता है। कालिदास ने हनुमान सीतान्वेषण के समय हनुमान अनेक बाधाओं को दूर करते हुये समुद्र को लांघकर लंका पहुंचने का वर्णन है।

रघुवंश महाकाव्य के उन्नीस सर्गों में कालिदास ने महाप्रतापी राजा दिलीप से लेकन अग्निवर्ण तक 27 राजाओं का आदर्शमय वर्णन किया है रघुवंश महाकाव्य की सभी विशेषताऐं अपने सर्वोत्तम रूप में प्रकट हुई है। प्रायः सभी रसों का पूर्ण परिपाक मिलता है। अज विलाप का वर्णन करूण रस का उत्तम उदाहरण है। विभिन्न राजाओं का चरित्र चित्रण करने में कवि को अद्भुत सफलता प्राप्त हुई है।

अभिज्ञान शाकुन्तलम – यह महाकवि की सर्वोत्कृष्ट रचना है जिसे न केवल भारतीय अपितु पूरे विश्व साहित्य में अत्यंत गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त है। अभिज्ञान शाकुन्तलम् में कुल सात अंग हैं जिसमें हस्तिनापुर के राजा दुष्यंत तथा कण्व ऋषि की पालिता कन्या शकुन्तला के मिलन, वियोग तथा पुनर्मिलन की कथा का नाटकीय चित्रण अत्यंत सजीवता के साथ किया गया है।

"हस्तिनापुर के राजा दुष्यंत आखेट करते हुए कण्व ऋषि के आश्रम में जाते हैं जहां शकुन्तला से उनका मिलन होता है । वह वहाँ कुछ समय रूक जाते हैं। राजा तथा शकुन्तला का समागम होता है उसे अपनी अँगूठी देकर वह अपनी राजधानी वापस लौट आते हैं। शकुन्तला उनकी वियोग से खिन्न बैठी रहती है। एक दिन दुर्वासा ऋषि आश्रम में जाते हैं, किन्तु शकुन्तला दुष्यंत के विषय में निरंतर चिन्तनशील होने के कारण उनका अतिथि– सत्कार नहीं करती । क्रोध युक्त दुर्वासा उसे शाप देते हैं कि दुष्यंत उसे भूल जाएगा । कण्व ऋषि तीर्थ यात्रा से वापस आने के बाद सारा वृतांत जानकर हर्षित होते हैं। वे शकुन्तला को गौतमी तथा अपने दो शिष्यों शारद्वत और शार्ङ्गंख के साथ हस्तिनापुर भेजते है। मार्ग में अँगूठी गिर जाती है। हस्तिनापुर पहुंचने पर दुर्वासा के शाप के कारण दुष्यंत उसे भूल जाते हैं। आश्रमवासी शकुन्तला को त्यागकर चले जाते हैं, तत्पश्चात् एक दिव्य ज्योति उसे स्वर्गलोक उठा ले जाती है, जहां वह अपनी माता मेनका के साथ मारीच ऋषि के आश्रम में रहने लगती है। वहीं उसे भरत नामक पुत्र उत्पन्न होता है। इधर राजा की अंगूठी जिसे एक मछली निगल गयी थी, पुनः उसे प्राप्त होती है। देखते ही उसकी स्मृति जागृत हो उठती है तथा वह शकुन्तला के वियोग में बैचेन हो उठता है। अन्ततः देवासुर संग्राम में इन्द्र की सहायता के लिए वह स्वर्गलोक जाता है जहाँ उसे विजयश्री मिलती है। लौटते समय वह मारीच के आश्रम में जाकर भरत तथा शकुन्तला को प्राप्त करता है तथा दोनों के साथ अपनी राजधानी वापस आता है। मिलन तथा मारीच के आशीर्वाद से नाटक की समाप्ति होती है।"6

अभिज्ञान शकुन्तलम् में कालीदास ने प्रेम तथा करूणा का अपूर्व सम्मिलन प्रस्तुत किया है। नाटक का चतुर्थ अंक जिसमें कण्व ऋषि अपने शिष्यों के साथ शकुन्तला को आश्रम से विदा करते हैं। अत्यंत प्रभावपूर्ण एवं करूणोत्पादक है।

मालविकाग्निमित्र – यह कालिदास का प्रथम नाटक है जिसमें पाँच अंक है। इसमें रघुवंशीय राजा अग्निमित्र तथा मालविका जो रानी की सेविका थी की प्रणय कथा का वर्णन कमनीयता के साथ किया गया है।

विक्रमोर्वशीय – यह कालिदास का दूसरा नाटक है जिसमें 5 अंकों में पुरूरवा तथा उर्वशी के प्रणय कथा का वर्णन मिलता है। यह आख्यान में कुछ शपथ ब्राम्हण का उल्लेख मिलता है। इस प्राचीन वैदिक आख्यान में कुछ परिवर्तन पर इसका रमणीय नाटकीय चित्रण प्रस्तुत कर लिया है। पुरूरवा एक उपकारी शासक है वह राक्षस से उर्वशी नामक एक अप्सरा का उद्धार करता है। उर्वशी उनके आलौकिक रूप पर मुग्ध होकर कई शर्तों के साथ उससे विवाह करती है पुरूरवा उसके वियोग में पागल बनकर जंगलों में मारा–मारा फिरता है। पुरूरवा के प्रेम एवं उसकी भावनाओं का चित्रण अत्यंत मार्मिकता के साथ प्रस्तुत किया है।

सारांशतः कहा जा सकता है कि महाकवि कालिदास संस्कृत साहित्य जगत के कुलगुरू के रूप में विख्यात हैं साथ ही बहुमुखी प्रतिभा के धनी कवि हैं। साहित्य के श्रेष्ठ साधक होने के साथ साथ वे भारतीय संस्कृति के मर्मज्ञ व्याख्याता हैं। कहा जा सकता है कि कालिदास ने आने वाली पीढ़ियों के कवियों, साहित्यकारों आदि को बहुत प्रभावित एवं प्रेरित किया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

संस्कृत साहित्य का विशद इतिहास– डॉ पुष्पा गुप्ता पृ.48
मेघदूत (पूर्वमंत्र) 14 वां श्लोक
रघुवंश– कालिदास 5/2
कुमार सम्भवे– कालिदास 4/33
रघुवंश महाकाव्ये– कालिदास 2/20
प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति पृष्ठ–800